Chapter 4

bihar board 9th class geography notes – जलवायु

जलवायु

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

एक विस्तृत क्षेत्र में लोग 80 वर्षों से अधिक समयावधि के मौसमी या वायुमण्डलीय विशेषताओं के कुल योग के औसत को जलवायु कहते हैं। किसी क्षेत्र या स्थान के खास
समय में वायुमण्डलीय दशाओं को मौसम कहा आता है। हमारे देश में मौनसूनी जलवायु पाई जाती है।
जलवायु के कारकों को नियंत्रित करने के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो जलवायु को प्रभावित करते हैं-LANDFORMS

L-Latitude अक्षांश
A- Altitude। ऊँचाई
N- Nearess from sea. समुद्र से निकता
D- Direction of wind. पवन की दिशा
F-. Forest. वन
o-Ocean current सामुद्रिक जलधारा
R-Rainfall वर्षा
M-Mountain पहाड़/पर्वत
S-Soil मिट्टी
ये सभी भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं। भारत में मानसून का अर्थ सामान्य बोलचाल की भाषा में वर्धा से है। अर्थात् अच्छी मौनसून का अर्थ है अच्छी वर्मा। हमारे देश में पौनसून के स्वभाव में अनिश्चितता पाई जाती है। हमारे देश में ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन दोनों प्रकार की वर्षा होती है। भारत में ग्रीषाकालीन वर्षा दक्षिण-पश्चिम मौनसून हवा से होती है।
दक्षिण भारत त्रिभुजाकार होने की कगह से दक्षिण-पश्चिम मानसुन हवा दो शाखाओं में बंटकर आगे बढ़ती है। एक शाखा अरब सागर की शाखा है तथा दूसरी बंगाल की खाड़ी शाखा है।
भारत में शीतकालीन वर्षा के सीमित क्षेत्र है। लौरती पौनसून तथा उत्तर-पूओं मौनसून से भारत के पूर्वी तटीय भाग रामिलनादु तथा केरल में वर्षा होती है। स्थल से चलनेवाली ये हवा जब बंगाल की खाड़ी से होकर गुजरती है तो नमी धारण कर लेती है जिससे यह वर्षा होती है।
भारत देश में कुल छः ऋतुएँ पाई आती है-यसत, ग्रीष्म, वर्ग, शारद, हेमंत एवं शिशिर। शीत ऋतु में सूर्य दक्षिणी गोलाई में होता है अतः उत्तरी गोलार्द्ध ठंडा रहता है। आकाश स्वच्छ रहता है तथा बादल रहित आकाश के कारण रात में ताप विकिरण तेजी से होता है तथा पारा नीचे गिर जाता है। जैसे-जैसे सूर्य की किरणें लम्बवत होने लगती हैं। भारत में गर्मी बढ्ने लगती है। जून तक कर्क रेखा के ऊपर सूर्य लम्बवत को जाता है तथा भीषण गर्मी पड़ने लगती है। इसे ग्रीष्म ऋतु कहते हैं। आधे शून के बाद मौसम में बदलाव आने लगता है। इवा तेजी से दक्षिण पश्चिम से आने लगती है। आकाश बादलों से भर जाता है तथा वर्षा होने लगती है। इसे मानसून का आना अर्थात् वर्षा ऋतु कहते हैं। वर्षा ऋतु में औसत तापमान, ग्रीष्म ऋतु से थोड़ा कम होता है। वर्षा ऋतु में शुष्क बनस्पति भी लहलहा उठली है। चारों तरफ हरियाली छा जाती है। नदी, तालाब पानी से भर जाते हैं तथा कृषक खेती का कार्य शुरू कर देते हैं। सितंबर के अंत में सूर्य के दक्षिणायन होने से उत्तरी-पश्चिम भाग का निम्नदाब समापा होकर दक्षिण में खिसक जाता है। अत: दक्षिण पश्चिम मौनसून कमजोर पड़ने लगता है। सितम्बर तक मौनसून राजस्थान, गुजरात,

https://www.evidyarthi.in/

पश्चिम गंगा के मैदान तथा मध्य भारत से लौट जाता है। अक्टुवर में यह भंगाल की खाड़ी के उपर में स्थित हो जाता है।इसे ही मौनसून का लौटना कहते हैं। भारत में कृषक मौनसून का बेसब्री से इंतजार करते हैं। यह विभिन्न प्रकार की फसलों को उपजाने में सहायता करता है। अत: यह देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/